



हयनाश्वाधिदामिडदृष्टवहयन॥

॥सखावनिहवनधर्माभन॥

लश्रीशोकैषत्रजमजमभयना॥

॥नमविशसवादिदुऊ॥

नकसखत्रकवदनश्नगतमकटकसितितिप्रावती॥

वोवर्द्धाकिनिविष्कननिश्चौरवनयायित्जितग्यात्रदयनि॥

दहितकनवज्वित्नासिनदग्धनिश्चामकैज्ञाटकवशुमात्रयिवयि॥

२४ उरुहा जूका का दमवः श्रीपिम्पन

१५५



नवीक २४१

नवतीमद्यहमाज्ज उदिया नगमने २२ काना नय हवन नग नय वसिगा
॥ श्रीविष्णु प्रोद वीरु नगमहि ना १२ कनसिद्धि सिद्धि देहि मे
माना ॥ ६०३०० ॥ नग नग उहि ॥ नवा कनसिद्धि सिद्धि देहि मे
कंयि सहा कं सिं धरु पिना ॥ ॥ नता दं नता दं १ नता नता दं
दं दं ॥ ॥ धा घन नदत हा धय हनु धना १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

पुनक यो न २२

हिना ॥ ॥ कमु निसु मुनी भादती आ कर्षता १ आदि अक कल्यान
कनका ॥ ॥ स्वर्गमध्या ना न गिरु वन १ गनय नियजा सर्व का
कसि च ॥ ॥ नगमी जी गयी व कया ला भलिन मो हिय क हन य
वमदा हनता १ नवसि नमा नायी वसरा या घु रम क हिरु पि न वदान
॥ ॥ ॥ दं दं का लसं जा न वदता व वत वा दत निरसम दे हा का रा धिय

११ पुनरावृत्तसुखयाभिधानवदन् २ नृत्यगंगासमस्तकानिमित्ते पुनरावृत्ते
सदावृत्तना ॥ अमुकैरुदा अमुक्यामनीदनी पुनरावृत्तसुखयादं
अमुकदाकयदलितानिलतावृत्तं पुनरावृत्तानिववावृत्त ॥ विधावृत्तयाय
युधैवका कनारनीदनी अमुकानिवृत्तनामयं २ अमुकसुखरुलयायनीद
न २ मुक्यायवृत्तना ॥ कि ॥ २४ वृत्तगवृत्तविधायुधैवकायनीदं

मावृत्ता कनकवृत्तमुकसुखयादनी २ उल्लेखमावृत्तनी वृत्तवादान वृत्तयव
वृत्तनीवृत्तविधि ॥ कि ॥ ॥ कं कं मुक्यायवृत्तनी नीलवायवृत्तनी २ अमुक
कनकवृत्तयवृत्तनी २ अमुकवादि अमरनमावृत्तयवृत्तनी समवृत्तयवृत्तनी
वृत्तयवृत्तनी ॥ अयोधिननीवृत्तनी वृत्तवादानं कं कनकवृत्तयवृत्तनी
२ वृत्तयवृत्तनी ॥ वृत्तवादानं वृत्तयवृत्तनी ॥

विषय

२६ ॥ रागादिभिराविष्टयश्च विनश्यतसंज्ञाया कर्मविप्रदायानि नारिकेत
नश्चरुयौक्षिनीविप्रदायि ॥ २७ ॥ यौक्षिनीविप्रदायि विनिष्कारात्तस्य यथा मस्य यने
म के ॥ नमस्तस्मै ध्यायं कालवर्गं हवदसं नमस्विभूयं ॥ २८ ॥ ययदमसं
जायं रुवनीधय मरुदजानदयय कानपुयं ॥ २९ ॥ ययदयय कानपुयं
कामपुयमनु नाममोशान सुहायशानं ॥ ३० ॥ ययदयय कानपुयं ययदयय कानपुयं

[illegible]

अथ

मधुलि
य

कामाशास्त्रमधिरकीलधर्म कामानन्ददायक ॥ १८८॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
आयिमाश्री नारदमुनिः दक्षिणतमो विष्णुः ॥ वासुदेवस्यैव स्युः स्युः
माशास्त्रमधिरकीलधर्म कामानन्ददायक ॥ ॥ दक्षिणतमो विष्णुः स्युः स्युः
वामाश्री नारदमुनिः दक्षिणतमो विष्णुः ॥ वासुदेवस्यैव स्युः स्युः
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ १८८॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

५५५